ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

''भूमंडलीकरण, मीडिया और भारतीय नारी''

डॉ0 पंकज शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर–इतिहास
नेहरु स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ललितपुर

भूमंडलीकरण अथवा वैश्वीकरण के इस युग को प्रायः सूचना का युग कहा जाता है। सूचनाओं के सतत् प्रेषण पर ही सम्पूर्ण विश्व टिका हुआ है, जिसे संचार माध्यम अर्थात 'मीडिया' पूर्णता प्रदान करता है। वास्तव में मीडिया व्यक्ति से व्यक्ति, समाज से समाज एवं देश को देश से जोड़ने के साथ ही परस्पर संवाद तथा विचार–विमर्श के लिये आधार पृष्ठभूमि का भी निर्माण करता है। इंटरनेट, कम्प्यूटर, मोबाइल एवं संचार के आधुनिकतम संसाधनों के माध्यम से विश्व में राष्ट्रों, समुदायों, संस्कृतियों एवं व्यक्तियों के मध्य का फासला सिकुड़ कर विश्वग्राम का स्वरुप ले चुका है। उदारीकरण, वैश्वीकरण, निजीकरण, एवं विनिवेशीकरण के इस युग म जब हमारे विचार, मान्यतायें, समाज एवं सांस्कृतिक मूल्यों में परिवर्तन का एक दौर प्रारम्भ हुआ है, वहीं भारतीय नारी का स्वरुप भी इसके प्रभाव से अछूता नहीं रह गया है। पाश्चात्य सोच, विचार, प्रगतिशील दृष्टिकोण एवं आधुनिक बोध ने जहॉ भारतीय नारी को परम्परागत पराधीनता का बोध कराकर पुरुषवादी सत्ता की कैद से निकलने की ललक एवं ताकत प्रदान कर उसे सशक्तिकरण की ओर अग्रसर किया, वहीं इस भूमंडलीकरण, बाजारवाद एवं मीडिया के नकारात्मक दृष्टिकोण ने भारतीय नारी को उपभोगवादी वस्तु मात्र बनाकर रख दिया है। अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य में भारतीय नारी के स्वरुप एवं उसकी भूमिका का नवीन आरेखों में पुनर्मूल्यॉकन परमावश्यक हो गया है।

इतिहास के आइने में भारतीय नारी–

पॉच हजार वर्ष के सामाजिक इतिहास वाले इस भारतवर्ष में सृष्टि के ऊषाकाल में अन्य संस्कृतियों की तुलना में भारतीय नारी का जीवन स्तर निःसंदेह उन्नत था। मातृशक्ति को वरीयता देने वाले हड़प्पा काल में जहाँ यह स्वाभाविक स्थिति थी, वहीं वैदिक युग भी इससे अधिक पीछे नहीं था। यद्यपि बलशाली शारीरिक संगठन, कौटुम्बिक अभिवृद्वि, जन–धन की रक्षा एवं तर्पणादि के उत्तरदायित्व के कारण स्वाभाविक इच्छा, प्रायः पुत्र के लिये ही रहती थी, तथापि पुत्री भी हेय अथवा त्याज्य कदापि नहीं थी। साक्ष्यों के अनुसार वैदिक युग में स्त्री यज्ञ कर सकती थी, उसका यज्ञोपवीत संस्कार होता था, वह शिक्षा ग्रहण कर सकती थी तथा स्वंय वर का चनाव कर सकती थी। घोषा, अपाला, लोपामुद्रा,एवं विश्ववारा आदि स्त्रियाँ ऋग्वेदिक मंत्रों की रचयिता थीं।[1] महाभारत में भीष्म ने पुत्री को पुत्र के समान कहा है। महाभारत के अनुसार गृहणीहीन घर को घर न मानकर जंगल के समान कहा गया है।[2] धीरे–धीरे स्थितियों में परिवर्तन आया तथा उ0 वैदिक काल तथा स्मृतियुग तक पितृपूजा के महात्म्य में अभिवृद्वि हुई

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

जिसकी क्रियान्विति पुत्र के द्वारा ही संभव थी। फलस्वरुप स्त्रियों की शिक्षा में बाधा पहुँची, विवाह की आयु घटी, धार्मिक संस्कार में भाग लेने की मनाही हो गई। स्त्री पर अनेक कर्तव्यो का बोझ लादकर उसे पिता, पति एवं पुत्र के संरक्षण में रखकर उसकी स्वतंत्रता का अपहरण कर लिया गया।[3]

इस्लाम के आगमन एवं मुस्लिम साम्राज्य स्थापना के काल में तो भारतीय स्त्री की स्थिति अत्यन्त दयनीय एवं शोचनीय हो गई तथा वह अपने कवच में और अधिक सिमट कर रह गई। रक्त की शुद्वता, कन्या अपहरण, बाल विवाह एव दहेज मुक्ति का सीधा एवं सरल समाधान कन्यावध प्रथा को प्रश्रय दिया जाने लगा। हालांकि भक्ति आंदोलन के माध्यम से संतों एवं सूफियों ने अपने ओजस्वी विचारों से परम्परावादी एवं रुढ़िवादी समाज की बुराइयों को उजागर करके इससे कुछ निजात अवश्य ही दिलाई।

मीराबाई, रजिया, पद्मिनी, नूरजहाँ, जीजाबाई आदि सशक्त महिलायें तत्कालीन सामाजिक वर्जनाओं को तोड़नें में सफल रहीं, हॉलांकि दिन–प्रतिदिन साधारण महिलाओं की स्थिति जस की तस ही रहीं।

अंग्रजी शासनकाल में हुये बौद्विक नवजागरण के फलस्वरुप राजा राममोहन राय, रानाडे, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महात्मा ज्योतिबा फूले, स्वामी दयानंद सरस्वती, विवेकानंद आदि समाज सुधारकों ने रूढ़िवादी, परम्परावादी, कट्टरवादी, पुरोहितवाद, अंधविश्वासों से युक्त धार्मिक परिवेश की कुरीतियों एवं बुराइयों को दूर कर घोषित वर्ग(महिलाओं) की स्थिति में सुधार के लिये अथक प्रयास किये।

नारी सशक्तिकरण के प्रयास–

नारी सशक्तिकरण से सामान्य आशय नारी को शक्तिसम्पन्न बनाना है। किन्तु व्यापकता में इसका अभिप्राय पुरुषों के बराबर वैधानिक, राजनैतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, तथा आर्थिक क्षेत्र में उनके परिवार, समुदाय, समाज, एवं राष्ट्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में निर्णय लेने की स्वायत्ता से है।[4] पुनर्जागरणकाल में राजा राममोहन राय, देवेन्द्र नाथ, केशवचंद्रसेन आदि ने बालविवाह, पर्दाप्रथा एवं बहुविवाह आदि का विरोधकर नारी उत्थान की शुरुआत की। सन् 1829 ई0 में राजा राममोहन राय के प्रयासों से सतीप्रथा विरोधी अधिनियम पारित हुआ। नारी शिक्षा के विकास के लिये रानाडे एवं ज्योति राव फूले ने अनेक कार्य किये। 1848 ई0 में ज्योतिबा ने ही पुणे की बुधवार पठ स्थित श्री भिण्डे के मकान में संभवतः प्रथम कन्या पाठशाला आरंभ की थी।[5] उनका कहना था कि एक शिक्षित माता द्वारा डाले गये संस्कार हजार शिक्षक भी नहीं डाल सकते।[6] उनके सानिध्य में उनकी पत्नी सावित्रीबाई ने नारी उत्थान की दिशा में भारत की पहली संस्था ' महिला सवा मंडल' का गठन किया।[7] स्वामी दयानंद, पंडिता रमाबाई ने भी बालिका शिक्षा पर विशेष जोर दिया। ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने स्त्री शिक्षा के साथ विधवा पुनर्विवाह को प्रोत्साहित किया। स्वामी विवेकानंद भी महिला उत्थान पर जोर देते हुये कहा करते थे कि ''जब तक महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं होगा तब तक विश्व का

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

कल्याण संभव नहीं है, क्योंकि पक्षी एक पंख से आकाश में उढ़ान नहीं भर सकता है।''[8] पं0 विष्णु शाष्त्री, डा0 भाऊदाजीलाड़, महात्मागाँधी जैसे महापुरुषों तथा थियोसोफिकल सोसाइटी जैसी विभिन्न संस्थाओं की ममतामयी, मानवतामयी,और प्रगतिशील दृष्टिकोण के फलस्वरुप स़्त्री को एक मनुष्य के रुप में देखना आरम्भ हुआ तथा उनके उत्थान के लिये अनेक आंदोलन भी चलाये गये। परिणामस्वरुप नारी शिक्षा एवं राष्ट्रप्रेम के प्रति जागरुकता के कारण नारी ने भी राष्ट्रीय आंदोलन में त्याग एवं बलिदान देकर अपनी सक्रिय सहभागिता को प्रदर्शित किया। देवी चौधरानी, इंदौर की रानी भीमाबाई, मद्रास की वेलुनाचियार, चित्तूर की रानी चेनम्मा, रानी झिण्डन आदि ने जहॉ 1857 ई0 से पूर्व संघर्ष में भाग लिया वही आजादी के प्रथम स्वतंत्रता संग्रम में बेगम हजरतमहल, रानी लक्ष्मीबाई, मैना, अजीजनबाई, झलकारीबाई आदि ने अंग्रेजों के दॉत खट्टे किये। गाँधीजी द्वारा चलाये आंदोलनों में भी कस्तूरबा, अरुणा आसफ अली, कमला नेहरु, विजयलक्ष्मी पंडित, मणिबेन पटेल, सरोजिनी नायडू, पार्वती देवी, मृदुलाबेन, सुचेता कृपलानी, नलिनी सेन, जानकीदेवी बजाज, भीकाजीकामा, स्वरुपरानी, राजकुमारी अमृतकौर, मीराबेन, एनी बेसेण्ट, तथा इंदिरा गाँधी आदि अनेक प्रमुख विभूतियों ने अपना योगदान दिया। स्त्रियों के महत्व को स्वीकारते हुये भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के संस्थापक ह्यूम ने भी कहा था कि, बिना स्त्रियों के सहयोग के संगठन की गतिविधियॉ निष्फल रहेंगी।[9]

शीघ्र ही पंडिता रमाबाई एवं स्वर्ण कुमारी के प्रयत्नों से कांग्रेस में स्त्रियों का प्रवेश प्रारम्भ हो गया। कांग्रेस के मंच से श्रीमती ज्योतिर्मयी गांगुली ने वंदेमातरम् गान पहली बार गया। सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिन्द फौज में भी कैप्टन लक्ष्मी सहगल, कमांडर लक्ष्मी स्वामीनाथन, कै0 आरती सहाय, कै0 मानवती आर्य आदि महिलाओं ने सैनिक के रुप में देश की आजादी मे अपना योगदान दिया। सन्1928 ई0 में 'अखिल भारतीय महिला संघ' की स्थापना हुई, जिसने नारी जागरण हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आजादी के बाद विभिन्न क्षेत्रों में आये व्यापक परिवर्तन के कारण नारी स्थिति के हालात काफी बेहतर एवं संतोषजनक हैं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय विकास में स्त्रियों के महत्व को समझते हुये सन्1975 ई0 में 'अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष' का आयोजन किया गया, वहीं हमने 1975–1985 तक प्रथम तथा 1985–1995 तक द्वितीय महिला दशक के रुप में मनाया। इस दौरान महिलाओं की प्रगति के रास्ते तलाश किये गये, उनके शिक्षण–प्रशिक्षण एवं रोजगार के अवसर जुटाये गये तथा सामाजिक क्षेत्रों में उन्हें हिस्सेदारी दी जाने लगी। 8 मार्च 1992 को ''अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस'' घोषित किया गया, तथा स्त्रियों के विकास के लिये विभिन्न संगठन एवं कानून आदि बनाये गये। भारत ने इस विषय को और अधिक महत्व देते हुये वर्ष 2001 को ''राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण वर्ष'' घोषित कर सरकारी एवं गैर सरकारी स्तर पर महिलाओं को शक्तिसंम्पन्न बनाने, तथा उनमे जागरुकता बढ़ाने के लिये गोष्ठियों, प्रदर्शनियों एवं कार्यशालाओं आदि का आयोजन किया गया तथा 21वीं सदी को महिलाओं की सदी घोषित किया गया।

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

वर्तमान युग में भारतीय नारी–

वास्तव में किसी भी सभ्य समाज की स्थिति उस समाज में स्त्रियों की दशा देखकर ज्ञात की जा सकती है, क्योकि स्त्रियों की स्थिति ही वह सपना है जो समाज की दशा एवं दिशा को स्पष्ट करता है। स्त्रियाँ ही संतति की परम्परा की प्रमुख वाहक है, किन्तु फिर भी नारी विकास की सम्पूर्ण मंजिल अभी दूर है। मास्को में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय महिला सम्मेलन को सम्बोधित करते हुये तत्कालीन सोवियत नेता मिखाइल गोर्बाच्योब के ये कथन स्त्रियों के व्यापक महत्व को स्वंय ही स्पष्ट करतें हैं– ''रोटी, किताब, और स्त्री– जीवन में ये तीन अनमोल रत्न हैं रोटी हमें जीवन देती है, किताबें पीढ़ियों को जोड़तीं हैं और महिलायें हमारे जीवनसूत्र को बॉधकर बनाये रखने में अहम भूमिका निभातीं हैं। इनमें से किसी भी एक के बिना जिंदगी बेमानी हो जाती है।''[10] विगत दो दशकों में आये वैश्वीकरण और भौतिकतावादी युग में भारतीय नारी आज जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति की उड़ान भर रही है, तथा आजाद पंक्षी की भाँति राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक, सैनिक, एवं शेक्षिक प्रगतिरुपी आकाश में विचरण करती अग्रसर हो अपना गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त कर रही है। पंचायतीराज के छोटे से सरपंच पद से लेकर भारत के सर्वोच्च राष्ट्रपति पद तक महिलायें सफलतापूर्वक अपने राजनैतिक कार्यभार का निर्वहन कर स्वयं को गोरवान्वित कर चुकीं हैं। मा0 प्रतिभा पाटिल, सोनिया गाँधी, सुषमा स्वराज, वृंदा करात, मायावती, ममता बनर्जी, मेनका गाँधी, शीला दीक्षित, रेंणुका चौधरी,, रीता बहुगुणा, पी0 लक्ष्मी, हेमामालिनी, शबाना आजमी, जयाबच्चन, जयाप्रदा, प्रियादत्त, राबड़ीदेवी, आदि जहाँ उच्च राजनैतिक पदों पर विराजमान हैं, वहीं अंतरिक्ष की ऊँचाइयों को छूने वाली कल्पना चावला, तथा सुनीता विलियम्स भारत की ही मूलनिवासिनी हैं इसीप्रकार खेल जगत में पी0टी0 ऊषा, सुनीता कुमारी, कर्णम मल्लेंश्वरी, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल मेरीकॉम, बबीता फोगाट धूम मचा रहीं हैं। साहित्य के क्षेत्र में तो अरुंधती राय एवं किरण देसाई ने तो प्रतिष्ठित बूकर पुरस्कार जीतकर भारत का नाम विश्व में रोंशन किया।

सौंदर्य प्रतियोगिताओं में भी भारतीय सुंदरियों ने मिस यूनीवर्स के रुप में सुष्मिता सेन एवं लारा दत्ता तथा मिस वर्ल्ड प्रतियोगिता में रीताफारिया, ऐंश्वर्य राय, प्रिंयका चोपड़ा एवं डायना हेडेन चर्चित चेहरे रहे हैं। सांस्कृतिक क्षेत्र में लता मंगेशकर, आशा भोंसले, अनुराधा पोड़वाल, सरोज खान, फरहा खान, सितारा देवी, सोनल मानसिंह, डोना गांगुली, शोभना, आशापारेख, वहीदा रहमान, वैजयंतीमाला, मालासिन्हा, शर्मिला टैगोर, ऐश्वर्य राय, सुष्मिता सेन आदि निरंतर अपना उल्लेखनीय प्रदर्शन दे रहीं हैं। भारत की प्रथम आई0 पी0 एस0 किरण बेदी एवं वाइस एडमिरल पुनीता अरोडा भी युवा पीढ़ी की प्रेरणास्रोत हैं। सामाजिक क्षेत्र में मेधा पाटकर, आर्थिक जगत में इंदिरा नुई, इंद्राणी मुखर्जी, चन्द्रा कोचर, किरण मजूमदार, अनुआगा, वहीं मीडिया जगत में सलमा सुल्तान से लेकर अनुराधा प्रसाद, बरखा दत्त, अंजना ओम कश्यप, श्वेता सिंह तक आज अपनी प्रतिभा के बल पर विश्व में भारत के परचम को लहरा रहीं हैं।

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

भूमंडलीकरण और भारतीय नारी–

पश्चिमी वर्चस्व वाले भूमंडलीकरण का भारत में प्रवेश विगत दो–ढाई दशक पूर्व ही हुआ। वास्तव में भूमंडलीकरण नई चीज न होतें हुये भी अपने खास व्यापारिक नियमों, लक्ष्यों और अनन्त विस्तार के कारण एक अभूतपूर्व घटना है, जिसका पहला और प्रधान लक्ष्य एक विश्व अर्थतंत्र एवं वैश्विक बाजार का निर्माण करना है, जिससे प्रत्येक राष्ट्र की अर्थव्यवस्था को अनिवार्य रुप से जुड़ना होगा। कम्प्यूटर, इंटरनेट, एवं संचार के अन्य आधुनिकतम संसाधनों के माध्यम से दुनिया के राष्ट्रों, समुदायों, संस्कृतियों एवं व्यक्तियों के मध्य का फासला लगातार कमतर होता जा रहा है। सूचना के इस भूमंडलीकरण के फलस्वरुप दुनिया में अन्तर्सम्बन्ध बढ़ा है एवं गतिशीलता आई है। विकासशील देशों में भूमंडलीकरण ने स्त्री के जीवनस्तर पर व्यापक प्रभाव डाला है। पूँजीवाद ने भूमंडलीकरण के माध्यम से अर्थ की लालसा का विस्तार किया। वास्तव में इसी 'अर्थ की लालसा' ने स्त्रीमुक्ति का अनजाना आधार तैयार कर आर्थिक विस्तार की राजनीति में स्त्री को घर की चारदीवारी से बाहर निकाला। एक ओर जहाँ औद्योगिक विकास के लिये स्त्री को सबसे सस्ते श्रम के रुप में इस्तेमाल किया गया, वहीं दूसरी ओर कारपोरेट जगत में विज्ञापन के माध्यम से स्त्री द्वारा उत्पाद बेचने के लिये उसका भोगपरक एवं परम्परावादी दृष्टिकोण बाजार द्वारा अपनाया गया। किन्तु इस पूरी प्रकिया में स्त्री को आर्थिक सत्ता एवं अपनी एक पहचान मिली, जो एक तरफा न होकर दो तरफा है। क्योंकि जहॉ बाजार स्त्री से फायदा उठा रहा है, वहीं आज स्त्री भी बाजार से फायदा उठा रही है। आज उसका शारीरिक सौंदर्य उसकी ताकत बन चुका है, जिसके आधार पर वह आज आर्थिक ताकत पा रही है। वास्तव में आर्थिक ताकत नारी को स्वतंत्रता देती है जिसके आधार पर वह पुरुषवादी सामाजिक बन्धनों को तोड़ने हेतु आतुर दिखती है। भूमंडलीकरण के दबाब से आज संयुक्त परिवार टूट रहे हैं, जो आज की नारी के पक्ष में ही दिखाई देते हैं। अब उसे इतने बड़े परिवार का खाना, कपड़ों की साफ–सफाई, परम्परा के दबाब, तनाव, ईर्ष्या, एवं तन–मन के शोषण से कुछ निजात अवश्य ही मिली तथा माँ, बहिन, देवी आदि आदर्शमयी स्थिति से बाहर आकर वह अपने मनोभावों को कुछ हद तक प्रकट कर पाने में सक्षम होने लगी है। शक्ति आधारित नारीवाद स्त्री के अधिकार, अनुभव, बराबरी, जीवन निर्धारण का अधिकार, सम्मान, सुरक्षा, समानान्तर सत्ता एवं शिक्षा की बात कर उन्हें सशक्तिकरण प्रदान करता है।

आज ऐक प्रोफेशन के रुप में स्त्री बाजार में कुछ भी करने को स्वतंत्र है, उसका बोल्ड होना, सैक्सी होना, बिंदासपन कहीं न कहीं स्त्री स्वतंत्रता का परिचायक है। आज वह मात्र सौंदर्य की पुतली ही नहीं रह गई है, वरन् मीडिया, फिल्मों, दफ्तरों, राजनीति, पत्रिकारिता, खेल, एवं सैन्य क्षेत्रों के माध्यम से स्वय को केन्द्रीय धारा में तेजी से शामिल कर रही है, जो स्त्री चेतना का परिचायक है तथा जिसे भूमंडलीकरण के सांस्कृतिक चेतना से आधार प्राप्त हुआ है।[11]

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

भूमंडलकरण ने जहॉ स्त्री मुक्ति को एक आधार प्रदान किया, वहीं पुरुषवादी बाजार ने उसे सेक्स की पुतलो बनाकर मनोरंजन, भोग, एवं बिकाऊ वस्तु के रुप में और भी अधिक व्यवसायिक ढंग से पेंश किया। स्त्री का शरीर अब ग्लोबल वैश्यावृत्ति और बलात्कार के लिये कहीं अधिक सुलभ हो गया। पर्यटन, शादी, एवं नौकरी के बहाने उसकी मासूमियत, परतंत्रता, गरीबी,एवं लाचारी के बहान उसे एक वस्तु की तरह यौन खिलौने के रुप में इस्तेमाल किया जा रहा है। भूमंडलीकरण ने आज स्त्री को एक सर्वाधिक बिकाऊ जिन्स में परिवर्तित कर दिया है, जिसके फलस्वरुप दुनिया में स्त्रियों के निर्यात के जरिये अरबों–खरबों डालर की कमाई की जा रही है। चूँकि भूमंडलीकरण की होड़ में शामिल छोटे देश अपने विदेशी ऋण को चुकाने हेतु अपने कृषि एवं उद्योगों को असमर्थ पा रहे हैं, अतः कर्ज चुकाने हेतु वह स्त्रियों के निर्यात के माध्यम से बड़े पैमाने पर विदेशी मुद्रा हासिल करने लगें हैं।[12] पूँजीवादी देशों के दबाब एवं विकासशील देशों की उलझन का शिकार अंततः 'सेक्स टूरिज्म' के नाम पर स्त्री को ही होना पड़ा है। इन स्त्रियों का मात्र यौन शोषण ही नहीं वरन् गुलामों का जीवन, शारीरिक यातनायें, यौन अंगों को विकृत कर उन्हें जानवरों की भॉति भोगा जाता हैं।

श्रम का ताल्लुक शारीरिक एवं मानसिक दोनों से ही होता हैं। शारीरिक श्रम से तो स्त्री का सम्बन्ध सदियों पुराना है, जिसमें वह परिवार के समस्त घरेलू कार्य, खाना बनाना, कपड़े धोना, चारा लाना, जानवरों की सेवा, घर के बड़े–बुर्जगों की सेवा आदि शामिल था, के साथ ही पुरुष के साथ कृषि सम्बन्धी कार्यो में भी सदैव उपयोगी सहयोग प्रदान करती आई है। किन्तु प्रारम्भिक भूमंडलीकरण के फलस्वरुप पूँजीवाद के विकास ने विकासशील देशों में सस्ते श्रम के रुप में आगे लाकर उसके घोषण को और भी अधिक बढ़ावा प्रदान किया है। एक तो उसे पुरुष के बराबर मेहनताना नहीं दिया, वहीं उसके कमायें धन पर उसका स्वामित्व भी नहीं रहा। उसका सम्पूर्ण धन पुरुष प्रधानता के कारण परिवार एवं पति के अधिकार में ही रहा, वहीं दूसरी ओर उसके श्रम में दोगुनी वृद्वि और हो गई। पुरुष जहाँ बाहर काम कर घर में आराम फरमाता , वहीं स्त्री को बाहर श्रम करने के पश्चात घर में परिवार के आवश्यक कार्यो में जुटना पड़ता। इस पर भी स्त्री की स्वाधीनता पुरुषवादी समाज के आँखों की किरकिरी बन गई एवं उसे अपना खतरनाक प्रतियोगी तथा उसकी स्वाधीनता पर अंकुश लगाने हेतु घर के दायरे में वापस लौटने को कहा गया।[13] हॉलाकि गैर शारीरिक श्रम के कला, कम्प्यूटर विज्ञान एवं सूचना प्रौद्यौगिकी के व्यवसायिक क्षेत्र ने स्त्री को अपनी एक अलग पहचान बनाने हेतु एक बड़ा मंच प्रदान किया, जिसमें उसने अपनी ताकत को भी आज सिद्व भी किया, किन्तु इस क्षेत्र में भी जहॉ उसकी उपयोगिता को सीमित करने का ही प्रयास किया गया, वहीं पति, बॉस, एवं सहकर्मी सभी ने उसका इस्तेमाल ही करना चाहा, जहाँ उसका विद्रोह भी पुरुषत्व की दबंगई में दबकर ही रह गया। विवाह, परम्परा, एवं सामाजिक तथा पारिवारिक दबाबों की दुहाई चलते आज भी उसे उसकी आर्थिक आजादी के आधार नौकरी छोड़ने को बाध्य किया जाता है। प्रसिद्व मनोचिकित्सक अरुणा बूटा का यह निष्कर्ष पूर्णतः सत्य के निकट है कि ''पुरुष

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

सफल औरतों को सशंकित नजर से देखते हैं, वे सांस्कृतिक संकट के शिकार हैं। वास्तव में पुरुष एक खूबसूरत गुड़िया चाहता है जो हर निर्णय मे उस पर ही निर्भर हो, वह दिखना चाहता है कि बागडोर उसके हाथ में है।''[14]

मीडिया और भारतीय नारी–

भूमंडलीकरण के इस दौर में आज मीडिया भी करोड़ो लोगों तक पहुँचने का एक अत्यधिक प्रभावशाली साधन है। पिंट मीडिया, टी0वी0, सिनेमा, चैनल्स, एवं इंटरनेट आदि सभी मीडिया के घटक हैं। किन्तु आज मीडिया महिलाओं के सम्बन्ध में सकारात्मक के स्थान पर नकारात्मक छवि ही अधिक प्रस्तुत कर रहा है। मीडिया का विशेषकर आकाशीय हमला नारी की छवि को विकृत करने में जुटा है। सास–बहू जैसे धारावाहिकों की बाढ़ में जहाँ एक ओर नारी को प्रधान पात्र के रुप में सशक्त नायिका अथवा खलनायिका के रुप में प्रस्तुत कर उनकी बढ़ती महत्ता को प्रदर्शित कर रहा है, वहीं अनावश्यक रुप में इन धारावाहिकों में नारी को पारिवारिक विघटन के लिये प्रमुख भाड़यंत्रकारी तथा अत्यधिक उन्मुक्त एवं उत्खृंच्लता दर्शाकर भारतीय परम्परागत मान्यताओं एवं संस्कृति के विरुद्व उसे प्रस्तुत किया जा रहा है। पैसे के लिये, मौजमस्ती के लिये, अपनी हवस मिटाने के लिये, प्रतिशोध के लिये, प्रेम या व्यवसाय मे प्रतिद्वन्दी को मिटाने को तत्पर 'माफिया क्वीन' के रुप में ही स्त्री अधिक सामने लाई जा रही है। फैशन आज जिस्म की नुमाइश का जरिया बन गया है। इस बदन उघाड़ने की अदा को मीडिया अत्यधिक प्रचारित एवं प्रसारित कर रहा है। पत्र–पत्रिकाओं एवं समाचारपत्रों, पत्नियों की अदला–बदली, कालेज की छात्राओं द्वारा पैसा के लालच में कालगर्ल बनने, सैक्स एवं विवाहेत्तर सम्बन्धों तथा समलैंगिता की खबरों से अटे रहते हैं। वैश्वीकरण के इस दौर में नारी को विज्ञापन के रुप में एक उपभोक्ता वस्तु के रुप में जमकर इस्तेमाल हो रहा है। आज लगभग प्रत्येक विज्ञापन में प्रत्येक ब्रांड के प्रचार क लिये, चाहे उसका प्रत्यक्ष सम्बन्ध नारी से कतई न हो, सभी में नारी को यौन वस्तु के रुप में प्रस्तुत कर उसके आकर्षण को कैश कराया जा रहा है। यहॉ मीडिया का स्पष्ट उद्देश्य यह है कि पारिवारिक दायित्वों का निर्वहन करो, जब उन्हे आवश्यकता हो उपलब्ध हो जाओ तथा बनाबटी श्रंगार एवं आकर्षक कपड़ों में उत्पादों को आकर्षण ढंग से प्रस्तुत कर उपभोक्ता पैदा करो।[15] इन विज्ञापनों में उत्पादों का कम प्रायः नारी देह को अधिक प्रस्तुत कर दौलत को बटोरा जा रहा है। वास्तव में इस तरह के विज्ञापन कामुकता को बढ़ावा देकर भारतीय नारी की छवि के साथ ही भारतीय समाज को भी विकृत करने का कार्य कर रहे हैं। भूमंडलीकरण के इस दौर में वस्तु के बजाय विज्ञापन की गुणवत्ता अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। आज नारी भी स्वय को सफल एवं समृद्व आर्थिक आधार देने की अति महत्वाकांक्षा पालतें हुये सामाजिक मूल्यों एवं नैतिकता के सारे दायरों को लांघते हुये पुरुषों की वासना के लिये सुलभ होकर 'पावर वूमेन' बनना चाहती है। अनेकों सर्वेक्षणों से यह स्पष्ट है कि आज की नारी स्वेच्छा से अथवा परिस्थियोंवश अपने बॉस, सहकर्मियों आदि के साथ ऑफिस की टेबिल, कारपार्किग, कैंटीन एवं क्लॉकरुम आदि में यौन आक्रमण का सामना करने को विवश है। बाजार ने जिस

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

प्रकार से भय, भूख, निद्रा एवं मैथुन का प्रयोग किया है, उसमें एक ही चीज काम कर रही है–भोग। भोग, चैन की नींद देता है, कई प्रकार की भूख से मुक्ति देता है एवं इस भोग से दूर जाना भय को जन्म देता है। वैश्वीकृत बाजार के नियमानुसार इसका सबसे अच्छा प्रदर्शन विज्ञापन है तथा इस भोगवादी बाजारु संस्कृति में हरेक भोग के साथ जो एक चीज जुड़ी है, वह है स्त्री।[16] वास्तव में इसी अति पाश्चात्यतावाद से भारत के सदियों पुराने पारिवारिक ढांचे और उसकी पवित्रता पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है।

वहीं दूसरी ओर मीडिया के प्रत्येक चैनल तथा पत्र–पत्रिकाओं के प्रथम पृष्ठ से लेकर अंतिम पृष्ठ तक कही न कहीं, किसी न किसी रुप में स्त्री ही केन्द्रित है जो उसकी भूमंडलीकृत व्यापकता का परिचायक है। ये सभी आज नारी क सौंदर्य के साथ ही यौनता की आवश्यक जानकारी , तथा नारी की अपनी पसंद, नापसंद आदि को भी खुले तौर पर जग–जाहिर कर रहीं हैं। यह स्वतंत्रता नारी को भूमंडलीकरण एवं मीडिया के माध्यम से ही प्राप्त हुई है। आज सौंदर्य स्त्री की ताकत बन कर उभरा है। सौंदर्य उत्पादों, अन्तःवस्त्रों, एवं नेपकिन आदि अपने नितान्त निजी मामलों के चुनाव में आज वह अपनी स्वतंत्रता को अधिक खुलकर स्पष्ट कर रही है, यह सब उसे विज्ञापन से प्राप्त हुआ। आज की स्त्री एक नये लुक में है, जिसका चेहरा ग्लोबल है, जो करुणा, दया, माया, ममता, लज्जा, एवं कोमलता क बजाय खुलेपन, चेहरे पर तेज, खुले बाल विश्वास की झलक के साथ खुद पर इतराती दिखाई देती है। उसके पहनावे, चाल, हॅसी, बोली और एक्सप्रेशन में एक नयापन है। भूमंडलीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी के विस्तार के चलते आज स्त्री साइबर चेंटिंग के समय पूरी आजादी के साथ पूरे विश्व में किसी भी जाति, धर्म, रंग, भेद आदि से ऊपर उठ कर दोस्ती कर रही है। ऑन लाइन स्त्री लिंग, धर्म, जाति, राष्ट्रीयता आदि से परे पूर्ण स्वतंत्रता कर अनुभव कर रही है। मोबाइल फोन,एवं इंटरनेट आदि ने उसे पूर्णतः निजता, सुरक्षा एवं रोजगार प्रदान किया है।

उपसंहार–

इस प्रकार भारतीय संदर्भ में भूमंडलीकरण एवं आधुनिक संचार साधनों ने भारतीय नारी को जहाँ आर्थिक रुप से समृद्व, सशक्त और आत्मनिर्भर बनाया है, वहीं नारी शोषण के अनेकानेक अवसरों को भी उजागर किया है। जो भारतीय नारी सामाजिक मर्यादाआ एवं परम्पराओं के मकड़जाल में जकड़ी हुई अपने व्यक्तित्व को परिवार की चारदीवारी के अंदर समेटे हुई थी, उस नारी को भूमंडलीकरण ने आज कहीं अधिक मुखर बनाकर घर की चारदीवारी से बाहर निकालकर उसमें आत्मविश्वास पैदाकर अपने व्यक्तित्व को बहुमुखी एवं समग्र विकास की ओर अग्रसित करने का कार्य किया है। आधी आबादी के विकास की ओर बढ़ते कदम आज पूरी दूनिया के लिये मिसाल बन चुके हैं। आज भारतीय नारी देश–दुनिया के प्रत्येक क्षेत्र में अपना सम्मानित स्थान बना रही है। वहीं हमारी सरकार भी उनके हौसले को बढ़ाने हेतु पूरी सक्षमता के साथ खड़ी दिखाई देती है। महिलाओं के उत्थान, विकास, स्वास्थ्य, खाद्य, पोषण सुरक्षा, न्यूनतम बुनियादी आवश्यकतायें,

सुविधायें, शिक्षा, रोजगार, न्याय आदि कल्याणोमुखी, विकासपरक एवं सशक्तीकरण हेतु तत्पर है। अनेकों कानूनों के अलावा उनकी सामाजिक समृद्वि हेतु 'राष्ट्रीय महिला आयोग' आर्थिक समृद्वि हेतु 'राष्ट्रीय महिला कोष' स्थापित किये गये हैं। किन्तु वहीं दूसरी ओर नारी के प्रति बढ़ती उपेक्षा, घरेलू हिंसा, बलात्कार, एवं यौन शोषण की बढ़ती घटनायें 21वीं सदी में विकसित होते भारत के लिये चिन्तनीय विषय है। पुरुषवादी मानसिकता, सामाजिक बन्धन, एवं परम्परायें आदि स्त्रीमुक्ति को शंका के घेरे में कैद करने को आतुर हैं।

अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि भूमंडलीकरण एवं मीडिया के बढ़ते प्रभाव के इस दौर में विकसित भारत की परिकल्पना हेतु नारी शिक्षा, एवं नारी जागृति अभियान को तेज करने के साथ ही पुरुषों को भी अपने रुढ़िवादी एवं संकीर्ण विचारों से बाहर आकर स्त्री को प्रोत्साहन देकर परिवार एवं कार्यो में उसे अपना सहयोग प्रदान कर उसे मात्र भोगवादी वस्तु न समझकर स्त्री को अपनी सहयोगी बनाना होगा। वहीं दूसरी ओर भारतीय नारी को अति पाश्चात्यतता, फैशन की होड़, धन की लोलुपता, प्रसिद्व प्राप्त करने की अतिमहत्वाकांक्षा, भौतिकता की होड़ एवं अंग प्रदर्शन के रुप में मात्र यौनिक खिलौना बनने से बचना होगा। इस दिशा में मीडिया को भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है कि वह नारी को मात्र भोगवादी, कामुक, अश्लील, भाड़यंत्रकारी, पारिवारिक विघटन के लिये उत्तरदायी, परिवारों में राजनीतिक पैठ, परस्पर वैमनस्य बढ़ाने वाली के रुप में दिखाकर भारतीय नारी की छवि को विकृत न करे, वरन् बुनियाद, हमलोग, आदि जनजीवन की परम्परा वाले धरावाहिकों को बढ़ावा प्रदान कर भारतीय संस्कृति एवं सामाजिक मर्यादाओं की दृष्टि से संयमित, नैतिक चित्रण कर उसे निखारने एवं परिवार तथा समाज के लिये उसकी उपयोगिता बढ़ाने में अपना अमूल्य योगदान दे। गहरे सांस्कृतिक मूल्य एवं सौंदर्यबोध भारत के पारिवारिक जीवन की आत्मा माने जाते हैं।

अति हर चीज की बुरी होती है, अतः अस्मिता बचाने को भारतीय पारिवारिक मूल्यों की ओर लौटना ही होगा। सार्थक बदलाव हेतु स्त्रियों को पुरुष प्रतिद्वन्दिता के निरर्थक संघर्ष में अपनी शक्तियों का अपव्यय करने के बजाय पुरुषों के सहयोग से ही प्रगति के पथ पर आगे बढ़ना होगा। स्त्री को अपने हीनभाव एवं अन्तर्द्वन्द से मुक्त होकर ही सफलता के मुख्य मार्ग पर बढ़ना होगा, जो सलीका और शिष्टाचार से होकर गुजरता है। वास्तव में स्त्री और पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं, अतः सामाजिक एवं आर्थिक रुप से सशक्त नारी भारतीय मर्यादाओं एवं नैतिकता के दायरे में रहकर पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर ही किसी भी समाज एवं राष्ट्र के विकास की गाड़ी को गति प्रदान कर सकती हैं। अतः आज नारी को सशक्त एवं मुखर होने की जरुरत है, यही विश्वग्राम के इस दौर में भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ होगी। वास्तव में आधी आबादी को विकास की राह पर लाकर ही पूरी प्रगति के स्वप्न को साकार किया जा सकता है–

ISSN-2394-6326
Journal de Brahmavart

" नारी, पुरुष से हीन नहीं, दीन नहीं। वह तो मधुर सितार है, संगीन नहीं।।
दोंनों सदा स्वतंत्र हैं, कर्तव्यों में। वे किसी के भी देखो अधीन नहीं।। "

संदर्भ–सूची

1 मिश्र, रमानाथ, " प्राचीन भारतीय समाज, अर्थव्यवस्था एवं धर्म" पृ0–11
2 मुखर्जी, रवीन्द्रनाथ, " भारतीय समाज एवं संस्कृति " पृ0–279
3 वही, पृ0–280
4 पत्रिका, " कुरुक्षेत्र ", मार्च 2007 , पृ0–35
5 गंगवार, ममता, " इतिहास के आइने में महिला सशक्तिकरण " , पृ0–107
6 नरके, हरि , (सम्पादित), "महात्मा फुले– साहित्य और विद्या " पृ0–26
7 गंगवार, ममता, " पूर्वोद्वत " पृ0–61
8 वही, पृ0–62
9 वही , पृ0–154
10 व्होरा , आशारानी , " आधुनिक समाज में स्त्री " पृ0–197
11 भास्कर, कुमार, " भूमंडलीकरण और स्त्री " पृ0–9
12 पत्रिका, " हॅस" – मार्च,2001 पृ0–28
13 सीमोन द वाउचर, अनु0 प्रभा खेतान, " स्त्री उपेक्षिता " पृ0–27
14 पत्रिका, " हॅस "– मार्च 2001 पृ0–39
15 देसाई, नीरा, एवं ठक्कर ऊषा, अनु0 सुभी धुसिया,– " भारतीय समाज में महिलायें" पृ0–167
16 भाष्कर, कुमार, " प्र्वोद्वत " पृ0–55, 56